सामान्य वर्षा की स्थिति में किसान भाईयों द्वारा किये जाने वाले कृषि कार्य

माह–जून

कृषि

1. प्रस्तावित धान रोपाई क्षेत्र के 1/10 भाग में नर्सरी अवश्य डालें। इसी तरह से माह के दूसरे पखवाड़े में रोपाई हेतु नर्सरी डालें।
2. धान व अन्य ग्रीष्मकालीन फसलों की कटाई आदि वर्षा आगमन पूर्व सम्पन्न कर लेवें। खरीफ फसल हेतु खेतों की साफ–सफाई कर जुताई करें। धान के खेतों के चारों तरफ मेंड़ बांध दें।
3. नर्सरी पौधों की कीट व्याधि व खरपतवार से रक्षा करें।
4. सीधे बोए जाने वाले धान की खुर्रा (जून के प्रथम सप्ताह में) बोनी कतार में करें। साथ ही उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा भी कूड़ों में डालें।
5. खरीफ की अन्य फसलें, मक्का, ज्वार, सोयाबीन, उड़द, मूंग, मूंगफली, तिल एवं अरहर की बोनी कतारों में करें। अरहर के साथ उड़द, मूंग, सोयाबीन तथा तिल की सहफसली खेती लाभदायक है। ध्यान रहे कि सभी फसलों की बीज प्रमाणित व उन्नत किस्म के हों तथा बोने से पहले उचित बीजोपचार (केप्टान) या थीरम 2.5 ग्राम/किलो ग्राम बीज) अवश्य करें।
6. गन्ने में मिट्टी चढ़ाये व उर्वरक की निर्धारित मात्रा दें।

उद्यानिकी

1. मई महिने में खोदे गये गड्ढों को सड़ी गोबर खाद तथा मिट्टी को बराबर मात्रा में मिलाकर भराई कर दें। गड्ढों को 6 इंच ऊपर तक भरें तथा दीमक नियंत्रण हेतु 20 ग्राम एल्ड्रिन डस्ट 5 प्रतिशत मिट्टी में मिलायें।
2. फल एवं फूल के पौधे तैयार करने हेतु गमलों एवं पॉलीथिन की थैलियों में मिट्टी, बालू और खाद का मिश्रण 3:1:2 के अनुपात में भरें।
3. महिने के अंतिम सप्ताह से आम, अमरूद, आंवला, चीकू, कटहल इत्यादि फल वृक्षों में अनुशंसा के अनुसार खाद एवं उर्वरक देने का कार्य आरंभ करें। खाद देने से पूर्व थालों की अच्छी प्रकार सफाई कर लें।
4. आंवले व बेर के पुराने वृक्ष जिसकी कटाई मार्च में कर दी गई थी उसमें नई डालियों में कलिकायन (बडिंग) का कार्य करें। कलिकायन के लिए उपयुक्त किस्म का ही चुनाव करें।
5. फूलगोभी की अगेती किस्म (पूसा रूबी, एच–एस 101, पूसा अर्ली) के बीज माह के अंत में नर्सरी में डालें।
6. टमाटर, मिर्च तथा बेगन के पके फलों से बीज निकालें। लता वाली सब्जी फसलों जैसे तरोई, लौकी, करेला आदि की बुवाई करें तथा बेल चढ़ाने हेतु मचान बनाए।
7. सूरन, अरबी, हल्दी, अदरक की बुवाई का कार्य पूरा करें।
8. जून के अंतिम सप्ताह में सफेद दुधिया एवं आयस्टर मशरूम का बीजारोपण करें।
9. महिलाएं आम का शरबत व आचार बनायें।

माह–जुलाई

कृषि

1. खेत मचाई के दूसरे दिन रोपाई करना उचित रहता है। धान की रोपाई माह के अंत तक समाप्त कर लें। रोपा लगाने समय एक स्थान पर दो से तीन पौधों की रोपाई करें। पौधे सदैव सीधे एवं तीन सेमी. गहरे लगावें।
2. धान में नत्रजन की 20 से 30 प्रतिशत मात्रा बोते समय तथा शेष 30 प्रतिशत मात्रा कंसे आते समय तथा 40 प्रतिशत मात्रा गभोट के 20 दिन पहले डालना चाहिए। स्फुर व पोटाश की पूरी मात्रा बोवाई या रोपाई के समय कतारों में डालें।
3. बियासी के समय खेत 5 से 10 सेमी जल स्तर होना चाहिए।
4. रोपाई के एक सप्ताह बाद ब्यूटाक्लोर 50 ई.सी. 1.2 लीटर प्रति एकड़ का छिड़काव करें। खरीफ की अन्य फसलों में संतुलित उर्वरक का उपयोग करें। सीधे बोये गये धान में बियासी व सघन चलाई करें व नत्रजन की शेष मात्रा डालें।
5. दलहन फसलों के बीज बोने के पूर्व 2.5 ग्राम थीरम प्रति किलोग्राम बीज से उपचारित करें। साथ ही सभी दलहनी फसलों के बीज राइजोबियम कल्चर से उपचारित करना न भूलें। उड़द की पीला मोजक रोग रोधी किस्म पंत यू–30 लगावें।
6. मक्का व सोयाबीन में बोवाई के 20–30 दिनों के अंदर निदाई करें तथा मक्के में बाली निकलने से पहले नत्रजन खाद डालें।
7. चारा फसलों में संकर नेपियर, पैरा घास, ज्वार, सूडान घास आदि ऊंची जमीन में या धान की मेड़ों पर लगायें।

उद्यानिकी

1. फल बाग में जल निकास की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
2. फल वृक्षों में खाद एवं उर्वरक देने का कार्य पूरा करें।
3. नये फल पौधों को इस माह लगाना आरम्भ करें। पौध लगाने के बाद आस–पास की मिट्टी को पैर से भलीभांति दबा दें।
4. केले के पौधों की रोपाई का कार्य आरम्भ करें।
5. पुराने केले के पौधों में बगल से निकलने वाले सकर्स को अलग करें।
6. नर्सरी में बडिंग, ग्राफ्टिंग का कार्य करें।
7. सब्जियों में लम्बे बैंगन की रोपाई करें बैंगन की रोपणी डालें।
8. फूल गोभी की अगेती फसल में निंदाई–गुडाई तथा कीड़ों से बचाव हेतु 400 मि. लि. प्रति एकड़ इंडोसल्फान 35 ई.सी. का छिड़काव प्रति एकड़ करें।
9. मध्यकालीन गोभी व मिर्च की रोपाई करें। जून में बोई गई भिण्डी, बरबटी में यूरिया का छिड़काव करें।
10. लौकी कुल की सब्जियों की बुआई करें। जून में डाली गई टमाटर व बैंगन की नर्सरी की रोपाई मेंड़ों पर करें।
11. पैरा मशरूम की अंडाकार अवस्था में तुड़ाई कर 200 ग्राम के पैकेट में पैक कर विक्रय करें।

माह–अगस्त

कृषि

1. करगा प्रभावित धान के खेतों से करगा छटाई का काम अवश्य करें। इन क्षेत्रों में बैंगनी पौधे वाली धान की किस्मों (श्यामला) की बोनी करना चाहिये। नील हरित काई उपचार वाले खेतों में तीन से चार से.मी. पानी का स्तर रखें।
2. धान में कीट नियंत्रण हेतु मोनोक्रोटोफॉस 36 ई.सी. 400 मि.लि. प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।
3. सीधे बोये गये धान में यदि पहली निंदाई न की गई हो तो अवश्य करें साथ ही 30 दिन के अंदर 12 कि.ग्रा. नत्रजन/एकड़ की दर से डाले।
4. धान में बियासी व चलाई का कार्य प्रारंभ करें। मक्का में नरमंजरी निकलते समय 10–15 कि.ग्रा. नत्रजन/एकड़ डालें।
5. दलहनी एवं तिलहनी फसलों में 30–35 दिन के अंदर निंदाई–गुडाई करें।

उद्यानिकी

1. फल पौध रोपण कार्य जो शेष रह गया है उसे पूरा करें।
2. पौधों के पास यदि पानी इकट्ठा हो तो उसे निकालने का प्रबंध करें।
3. नर्सरी में ग्राफ्टिंग तथा बडिंग का कार्य चालू रखें।
4. केले में बगल से निकलने वाले सकर्स को अलग करें तथा नये लगाये गये केले में सिफारिश के अनुसार उर्वरक दें।
5. फल वृक्षों में खाद देने का कार्य यदि अभी भी पूरा नहीं हुआ है तो उसे पूरा करें।
6. बैंगन, मिर्च, सब्जियों में 20–25 कि.ग्रा. यूरिया प्रति एकड़ डालें। वर्षा न होने पर हल्की सिंचाई करें। कीड़ों से बचाव हेतु कीटनाशक दवाओं का सिफारिश के अनुसार छिड़काव करें।
7. इस माह के अंत में मध्यम कालीन गोभी की रोपाई करें।
8. लौकी कुल की फसलों में 10–15 किलोग्राम यूरिया का प्रयोग प्रति एकड़ करें तथा बीटल कीट से बचाव हेतु कार्बोरिल पाउडर डेढ़ किलोग्राम प्रति एकड़ भुरकाव करें।
9. बेल वाली सब्जियों को सहारा देने हेतु लकड़ी लगायें।
10. अदरक व हल्दी में पौध गलन रोग की सुरक्षा हेतु ब्रासिकाल एक से डेढ़ ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
11. पैरा मशरूम, सफेद दुधिया मशरूम एवं आयस्टर मशरूम की दूसरी फसल का बीजारोपण करें।

माह–सितम्बर

कृषि

1. धान फसल की दूसरी निराई–गुड़ाई करें तथा कन्से फॅटने व दुग्धावस्था में 5–7 सेमी पानी खेत में अवश्य रखें। बाली निकलने से पूर्व 12 किलोग्राम नत्रजन प्रति एकड़ रोपाई वाले खेत में डालें।
2. धान में फफूंदी जनित झुलसा व शीथ गलन व भूरा धब्बा रोग नियंत्रण हेतु एक किलोग्राम कार्बेडाज्मि या हिनोसान (400 ग्राम दवा) 250 ली. पानी में घोल प्रति एकड़ छिड़काव करें। यदि फुदका कीट का प्रकोप दिखे मोनोक्रोटोफास 36 ई.सी. का 400 मिली. प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें।
3. धान के खेत में करगा उन्मूलन का कार्य करें।
4. मक्के की संकर किस्मों में 10 से 15 किलोग्राम नत्रजन मंजरी बनते समय करें। माह के अंत में चना व तोरिया की बोवाई करें।
5. दलहन एवं तिलहन फसलों में खरपतवार नियंत्रण व उचित जल निकास की व्यवस्था रखें।
6. उड़द व मूंग में पीला मोजेक रोग की रोकथाम हेतु डायमेथेएट 30 ई.सी. 250 मिली या फास्फोमिडान 85 ई.सी. 120 मिली प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें।

उद्यानिकी

1. पपीते के पौधे के रोपण कार्य पूरा करें।
2. बगीचे में सिंचाई नाली का निर्माण करें तथा खरपतवार नियंत्रण हेतु निंदाई–गुड़ाई करें।
3. संतरा एवं बेर में सूंड़ी कीट नियंत्रण हेतु कीटनाशक दवा मोनोक्रोटोफास या मेलाथियान का छिड़काव करें।
4. अदरक एवं हल्दी में सिंचाई करें।
5. अगस्त महीने में डाली गयी नर्सरी पौध की रोपाई करें। पिछेती किस्म की नर्सरी तैयार करें।
6. महीने के अंत में अगेती आलू (कुफरी चन्द्रमुखी) की बुवाई की तैयारी करें।
7. गोभी की अगेती फसल में गुड़ाई तथा निंदाई करें और 20 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड़ डालकर गुड़ाई करें।
8. मटर व मूली की अगेती किस्मों की बुवाई महीने के अंत में करें।

अक्टूबर

कृषि

- धान की फसल पकते समय खेत से पानी निकाल दें। अग्रेती फसल के 80 प्रतिशत दाने पीले पड़कर कड़े हो जायें तो कटाई करें। धान की खड़ी फसल में अलसी, तिवड़ा या चना के उतेरा की बोनी करें। अलसी की उतेरा फसल के लिए 10–15 किलो नत्रजन प्रति हेक्टेयर अतिरिक्त धान की फसल में फूल आने के समय डालना चाहिए।
- अच्छी तरह तैयार खेत में शीतकालीन मक्का, आलू चना, मटर, मसूर, सरसों व अलसी की बुवाई बीजोपचार कर संपन्न करें।
- बरानी क्षेत्रों में गेहूँ की (सी 308) की बुवाई उपयुक्त नमी होने पर बीज शोधित कर संपन्न करें।
- असिंचित तोरिया व चने में 20–25 दिन बाद पहली सिंचाई करं। चारा फसलों में बरसीम, लुसर्न एवं जई की बोनी करें। शरदकालीन गन्ने की रोपणी 15 अक्टूबर के बाद प्रारंभ करें।
- धान की फसल में गर्दन झुलसा रोग आगमन की स्थिति में बीम या फफंदनाशक 400 ग्राम दवा को 250 लीटर पानी में घोलकर/एकड़ की दर से छिड़काव करें।

उद्यानिकी

- नये बगीचे में यदि पौधे मर गये हों तो उनकी जगह नये पौधे लगयें।
- बगीचे की फसल में सिंचाई करें। आम, अमरूद, नीबूं, कटहल में सिफारिश के अनुसार उर्वरक की शेष मात्रा डालें। पपीता लगाने का कार्य इसी माह पूरा करे लेवें।
- आम में गुच्छा रोग की समस्या है तो एन.ए.ए. नामक हारमोन का 200 मि.ली/एकड़ की दर से छिड़काव करें।
- नये बगीचों में अंतवर्तीय फसल के रूप में बरबट्टी, लोबिया, चना, मसूर इत्यादि फसलें लगायें।
- टमाटर, मिर्च, बैंगन, गोभी आदि की पौध इस माह के आरंभ में डालें।
- आलू की बुआई का कार्य इस माह के मध्य से आरंभ करें। बीज शोधन हेतु डायथेन एम–45 दवा का 0.25 प्रतिशत घोल बनाकर 1 मिनट तक बीज को डुबायें। बादशाह, कुफरी सिन्दुरी, कफुरी ज्योति इत्यादि जातियों की अनुसंशा छत्तीसगढ़ के लिये की गई है।
- हरी मटर की उन्नत किस्में, पालक, मूली, गाजर, धनिया, मेथी, सौंफ की बुआई तथा रोपाई करें।
- शीतकालीन पुष्प लगाने का कार्य करें। गमले वाले फूल के पौधों में गुड़ाई कर उर्वरक डालें।

पशुपालन

- खुरपका–मुंहपका बीमारी से बचाव हेतु दुधारू पशुओं में टीकाकरण करायें एवं 15 दिन बाद उसी पशुओं को पोकनी का भी टीका लगवायें।
- दुधारू पशुओं में थनैला रोग से बचाव हेतु दूध पूरी मात्रा में यथाशीघ्र निकाल दें।
- मुर्गियों को सामुहिक रूप से दवापान करायें।

नवम्बर

कृषि

- धान की देशी एवं जल्दी पकने वाली जातियों का कटाई कर खेत को अगली फसल बोने के लिये तैयार करें।
- मैक्सिकन (सोनालिका आदि) गेहूँ के प्रमाणित बीजों की बुआई संपन्न करें। असिंचित गेहूँ से खरपतवार निकालें तथा 6–8 पत्तियां आने पर नींदानाशक 2,4–डी का प्रयोग करें।
- अन्य बोई गई रबी फसलों में निंदाई व सिंचाई करें।
- ज्वार, बाजरा के भुट्टे तोड़ लें तथा बीज के लिये भुट्टे अलग कर लें।
- फसलों को काट कर खेत में 1–2 दिन सूखने पर ही बोझा बनाकर खलियान में एकत्रित करें।
- कपास की चुनाई नियमित समय पर करते रहें और यदि मूंगफल्ली की खुदाई शेष हो, पूर्ण कर लें।
- गन्ने की फसल तैयार हो गई हो तो काट कर बाजार भेजें।

उद्यानिकी

- फल बाग में पौधों के थालों की गुड़ाई एवं निंदाई करें तथा तने पर बोर्डोपेस्ट लगायें।
- आम, लीची, चीकू, आंवला, इत्यादि पौधों में मिलिबग को पेड़ के ऊपर चढ़ने से रोकने हेतु ग्रीस की पट्टी लगायें तथा जमीन में 250 ग्राम फालीडाल डस्ट का भुरकाव/पेड़ के हिसाब से करें।
- आम के वृक्ष में इस माह पुष्प कलिका बनना आरंभ होता है अतः सिंचाई बन्द रखें जिससे अधिक से अधिक फूल आयें।
- गर्मी वाली अगेती सब्जियों की रोपणी तैयार करें।
- आलू में माहों से बचाव के लिये फोरेट 10 जी 4 कि.ग्रा./एकड़ मिट्टी चढ़ाते समय मिलायें तथा झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु बोर्डोमिश्रण एक प्रतिशत या डायथेन एम 45 का 0.25 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।
- मटर में चूर्णी फफूंद की रोकथाम हेतु केराथेन 0.15 प्रतिशत या सल्फेक्स 0.20 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।
- टमाटर, बैंगन मे कीड़ों की सुरक्षा हेतु थायोडान 0.02 प्रतिशत या मैलाथियान का छिड़काव करें।
- शीतकालीन सब्जियों की बुवाई पूरी करें। धनिया में पाउडरी मिल्ड्यू से बचाव हेतु सल्फेक्स 0.20 प्रतिशत का छिड़काव करें।
- यदि पिछले माह गुलाब की कटाई–छटाई पूरी ना हो पाई हो तो उसे पूरा करें। पौधों में खाद की निर्धारित मात्रा डालें।

पशुपालन

- पशुओं को रात में खुले स्थान में नहीं रखें। उनके खाने के एक चममच नमक का मिश्रण अवश्य दें।
- सूखे चारे के साथ हरा चारा भी खिलायें।

दिसंबर

कृषि

- गेहूँ में नत्रजन की शेष मात्रा दें तथा 15–20 दिन के अंतर से सिंचाई करते रहें। बारानी गेहूँ में यदि वर्षा की संभावना हो तो नत्रजन उर्वरक की मात्रा दें। रोगी पौधों की निकालकर नष्ट कर दें।
- धान व अन्य खरीफ फसलों की कटाई संपन्न करें। रबी फसलों की बोनी यदि शेष है तो इस माह में पूरी कर दें।
- बसंतकालीन गन्ने की बोआई के लिये खेत की जुताई भलीभांति करें।
- लूसर्न व बरसीम चारे की 30–35 दिन के अंतराल पर कटाई कर सिंचाई करें। ध्यान रहे की चारे की कटाई जमीन से 10 सें.मी. छोड़ कर करें। गर्मी में उपयोग हेतु लूसर्न/बरसीम चारे का संरक्षण करें।
- गन्ने की कटाई कर गुड़ बनावें या बाजार में विक्रय करें।
- गेहूँ में निंदा नियंत्रण हेतु 250 ग्राम, 2–4 डी तथा आइसोप्रोटान 600 ग्राम को 300 से 500 लीटर पानी में घोलकर बोआई के 30–35 दिन पर छिड़काव करें।
- चना, मटर एवं मसूर में निंदाई 40–45 दिन पर संपन्न कर सिंचाई की व्यवस्था करें।

उद्यानिकी

- आम लीची आंवला, के पौधों पर मीलीबग नामक कीट को चढ़ने से रोकने हेतु चिपचिपी पट्टी या ग्रीस पट्टी लगायें। छाल खानेवाली सुंडी के लिये रूई के फाहे में मोनोक्रोटाफास कीटनाशक दवा लगाकर छेद में डालें और गीली मिट्टी से छेद बंद कर दें।

पशुपालन

- गाय, भैसों में गर्भाधान हेतु उत्तम नस्ल के सॉड/भैसों का प्रयोग करें या कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा का लाभ उठायें।
- नवजात बछड़ों को 2–3 दिन तक खीस अवश्य दिलायें।
- अंडे देने वाले मुर्गियों को संतुलित आहार खिलायें।